रेजियो एमिलिया के दर्शन को भारत के पूर्व-स्कूलों के साथ समेकित करना

नीना कांजीरथ

यह विचार 2000 के शुरुआती सालों तक अपेक्षाकृत नया ही था कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा बच्चे के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अन्ततः मुझे माल्या अदिति इन्टरनेशनल स्कूल की तत्कालीन निदेशक गीता नारायणन के पास वापस ले गया, जिन्होंने हमें रेजियो एमिलिया के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया।

अन्य सभी कार्य पद्धतियों की भाँति, रेजियो का सूत्रपात और उसका निर्माण भी एक विशेष काल और स्थान के दायरे में हुआ। "इस पद्धति को, विध्वंसकारी द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात लॉरिस मालागुज्जी नामक शिक्षक ने इटली के रेजियो एमिलिया नगर के आसपास के गाँवों में रहने वाले माता–पिताओं के साथ मिलकर विकसित किया था। ऐसा माना गया था कि बच्चों को सीखने के एक नूतन ढंग की आवश्यकता थी : यह भी माना गया कि जीवन के विकास के शुरुआती सालों में लोग खुद अपना व्यक्तित्व ढाल लेते हैं और, इसके अलावा, यह भी कि बच्चों के पास सैकड़ों भाषाओं का अपना नैसर्गिक तोहफा होता है। इस पद्धति का लक्ष्य यह सिखाना है कि रोजमर्रा के जीवन में इन बातों का उपयोग कैसे किया जाए। यह अन्वेषण और खोज के माध्यम से चलने वाला व सम्मान, उत्तरदायित्व तथा सामुदायिक भागीदारी के सिद्धान्तों पर आधारित कार्यक्रम था। इसे आत्म–निर्देशित पाठ्यक्रम के माध्यम से बच्चों के हितों पर आधारित एक सहयोगी और समृद्ध बनाने वाले वातावरण में संचालित किया गया।"

(स्रोत : विकीपीडिया)

हमारे प्रारम्भिक शिक्षा केन्द्र के लिए हम रेजियो एमिलिया पद्धति के रूप में एक स्रोत से जुड़ गए थे। हमने उसके समग्र दर्शन को अपनाया और हम लोग मन ही मन बेहद प्रसन्न थे कि रेजियो के कई पहलू, खासतौर पर, उसके "आत्म–निर्देशित पाठ्यक्रम" ने हमें लचीलापन बनाए रखने का मौका दिया, खोजबीन तथा शोध करने की क्षमता दी तथा स्थानीय विशिष्टता और दशाओं के अनुरूप खुद को ढालने का अवसर दिया।

रेजियो एमिलिया का दर्शन प्रमुख रूप से निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आधारित है:

- बच्चों का उनके सीखने की दिशा के ऊपर कुछ नियंत्रण होना जरूरी है,
- बच्चों को छूने, चलने–फिरने, सुनने और देखने के माध्यम से सीखने का मौका मिलना चाहिए,
- बच्चों का दूसरे बच्चों से, और भौतिक वस्तुओं के साथ एक नाता होता है, जिसे जानने–समझने का तथा और आगे बढ़ाने का मौका उन्हें देना चाहिए,
- बच्चों के पास खुद को अभिव्यक्त करने के अनन्त तरीके और मौके होना चाहिए।

(स्रोत : विकीपीडिया)

रेजियो के लचीले दिशानिर्देशों के अनुसार निर्मित किया गया हमारा भौतिक परिवेश ऐसा था जहाँ पर्यावरण बच्चों के लिए तीसरे शिक्षक के रूप में मौजूद था। वहाँ बच्चों के लिए एक आँगन और कई सारे एकान्त कोने थे जहाँ वे एक दूसरे के साथ खूब समय बिता सकते थे। हमारे इस केन्द्र की इमारत के अन्दर की जगह और बाहर के स्थान अविभाजित (और बगैर दरवाजे वाले) होने के कारण मिले–जुले थे (इसमें बेंगलूरु की स्वास्थ्यवर्धक जलवायु की वजह से हमें बहुत लाभ मिला)। बच्चों के पनपने, उन्नति करने के इस स्थान पर माता–पिताओं का हमेशा स्वागत रहता था। सबसे बड़ी बात हमें उपलब्ध होने वाली सारी चीजों और स्थितियों के प्रति आदर का एक गहरा भाव बना रहता था। इसके अलावा यह एक रसायन मुक्त, पेड़ों, गिरती पत्तियों, फूलों, फलों, वहाँ रहने वाले और आने–जाने वाले भाँति–भाँति के जीव–जन्तुओं और सैकड़ों भाषाओं से भरा

ऐसा वातावरण था जो बच्चों को सहज रहने के लिए तथा एक–दूसरे के साथ लगातार बातों और विचारों को साझा करने के लिए प्रेरित करता था।

हम इस बात के लिए कृतसंकल्प थे कि जहाँ तक हो, खास तरह से अनुकूलित बड़ों की कोई भी दुनिया बच्चों के चरित्र को किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह या बँधी–बँधाई धारणाओं के द्वारा 'आकार' नहीं देगी। इसलिए हम एक ऐसी पाठ्यचर्या बनाने में जुट गए जो बच्चों के भीतर बाहरी दुनिया से अपने सम्बन्धों को लेकर रोमांच पैदा करे। उनके भीतर खुद के प्रति ऐसा गहरा बोध और समझ विकसित करे कि कैसी भी परिस्थिति उनके सामने आ जाए, अपने ऊपर उनका भरोसा जरा भी न डिग पाए।

शिक्षकों को बच्चों के आपसी वार्तालापों से सीखने के लिए और उसे लिखित रूप में दर्ज करने के लिए प्रेरित किया गया। रेजियो के एक पहलू ने मुझे खास तौर पर रोमांचित किया। वह था, बच्चों की सोचने और समस्याओं को हल करने की क्षमताओं को 'उकसाना'। इसी विचार से हमारे सक्रिय भागीदारी वाले विज्ञान कार्यक्रम ने जन्म लिया ।

चूँकि हम ऐसी पीढ़ी से वास्ता रखते थे जिसने अपना मनोरंजन मुख्य रूप से किताबों के द्वारा ही किया था, इसलिए मुझे इस बात का भरोसा था कि खुद से सीखने वाले बच्चों को तैयार करने का सबसे महत्त्वपूर्ण जरिया उनमें पढ़ने के प्रति लगाव और जुनून पैदा करना होता है। मेरे अतिशय सक्रिय स्वभाव से उपजी जरूरतों से जुड़े अवलोकनों पर आंशिक रूप से आधारित एक अन्य नूतन प्रयोग के अन्तर्गत मैंने तय किया कि सभी बच्चों को खुद यह तय करने का अवसर देना चाहिए कि वे कितनी बार और कब अपनी जगह से उठकर जाना चाहें या वापस बैठना चाहें, खड़े होना चाहें, इधर–उधर थोड़ा घूमना चाहें, बात करना चाहें, नतीजों को जितनी बार जरूरी हो देख सकें और अपने सीखने की दिशा तक खुद तय कर सकें। निर्णयों की स्वतंत्रता की इस कार्यविधि को अपनाने से कुछ चौंकाने वाले परिणाम और निष्कर्ष सामने आए। शिक्षक तनाव मुक्त हो गए, वे प्रेम और नरमी से बात करने लगे और अपने आसपास के सभी लोगों के साथ अपने रिश्तों का आनन्द उठाने लगे।

पदों का ऊँच–नीच वाला क्रम और आपसी द्वंद जैसी बातें दूर–दूर तक देखने को नहीं मिलती थीं। इससे एक ऐसा सुरक्षित वातावरण बन गया जिसमें गलतियाँ करने को सीखने के हिस्से की तरह लिया गया – यह एक क्रान्तिकारी, पर शिक्षक और बच्चों, दोनों के लिए सम्भवतः सीखने के सबसे प्रभावी उपकरणों में से एक था। बच्चे बमुश्किल ही बैठकर सीखते थे, लेकिन जब बैठते थे तो उसके पीछे उनकी अपनी मर्जी के विशेष कारण होते थे – जैसे लगातार बदलते हुए समूह बनाने के लिए, या किसी कार्य को पूरा करने के लिए या फिर खाना खाते समय – और इससे सीखना और मजेदार और स्वाभाविक हो जाता था जिसका प्रमाण उनकी बालसुलभ वाणियों में होने वाली धीमी 'चहचहाहट' होती थी जो पूरे वातावरण में धीरे–धीरे फैल जाती।

भारत में रेजियो को लागू करने व अपनाने के लिए हिम्मत और इस भरोसे की जरूरत है कि "सभी बच्चों के पास नैसर्गिक अधिकार होते हैं, और वे सभी सुन्दर, सशक्त, योग्य, सृजनशील, जिज्ञासु, और सम्भावनाओं व महत्त्वाकांक्षी अभिलाषाओं से भरे होते हैं।"

(स्रोत : विकीपीडिया)

रेजियो एमिलिया का अनुसरण करने के लिए जरूरी है कि शिक्षक उत्साहित व रोमांचित रहें और खुद अपने सीखने को लगातार आईना दिखाते रहें। इसके लिए शिक्षण के तरीकों और रवैयों में बुनियादी बदलाव की जरूरत है क्योंकि हमारा अधिकांश शिक्षण हमारे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से नहीं, बल्कि इस तथ्य के माध्यम से रूपान्तरित होकर बच्चों तक पहुँचता है, कि बच्चों के रूप में दरअसल हमें किस प्रकार पढ़ाया गया था!

नीना कांजीरथ आर. टी. नगर, बेंगलूरु स्थित गाया प्री–स्कूल एण्ड चाइल्ड केयर सेन्टर (www.gaiapreschool.com) की निदेशक हैं। उन्हें शिक्षक प्रशिक्षक, पाठ्यक्रम निर्माता, और पूर्व–प्राथमिक व प्राथमिक स्कूल शिक्षक के रूप में काम करने का 30 वर्षों से भी ज्यादा का अनुभव है। उन्होंने न्यूजीलैण्ड किण्डरगार्टन, श्रीलंका और इंडोनेशिया के ब्रिटिश और अमेरिकन इन्टरनेशनल स्कूलों में और माल्या अदिति इन्टरनेशनल स्कूल, बेंगलूरु में काम किया है। उन्होंने मल्टीमीडिया (बहुमाध्यमी) सामग्री तैयार की और स्कूलनेट, इण्डिया में शिक्षकों को एक बहु–संवेदी पद्धति के उपयोग में प्रशिक्षित किया और उसे कक्षा में तकनीक के उपयोग करने के साथ जोड़ दिया। पाठ्यक्रम तथा कक्षा में सिखाने की पद्धतियों पर पुनर्विचार में मदद करने के लिए क्रिस्टेल हाउस, इण्डिया (साधनहीन बच्चों के लिए एक स्कूल) और ओएसिस इन्टरनेशनल स्कूल के साथ भी काम किया है। उन्होंने बच्चों के लिए अनेक नाटकों का लेखन, निर्देशन और निर्माण किया है। कला और पश्चिमी शास्त्रीय संगीत उनकी पृष्ठभूमि है। वे बेंगलूरु वाइन क्लब की संस्थापक सदस्य हैं। उनसे kanjirath@yahoo.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी